01 / 11 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सेवा में सफलता की अनुभव

➢➢ अल्पकाल के संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करने का अनुभव

➳ _ ➳ मैं दुनिया की सबसे खुशनसीब आत्मा हूँ

→ जिनके दर्शन मात्र के लिये लोग तरस रहें हैं उनके दिल रूपी तख्त पर विराजमान होने का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त कर लिया

■ खुशी के पंख लगाए मैं आत्मा पंछी इस देह रूपी पिंजड़े के हर बन्धन को तोड़ अपने दिलाराम बाबा से मिलन करने चल पड़ती हूँ

■ अपने शिव पिया से मिलने की लगन में मग्न मैं आत्मा सजनी झूमती, गाती आकाश में विचरण करती, आकाश से भी ऊपर उड़ती जा रही हूँ

➳ _ ➳ फरिश्तो की आकारी दुनिया में स्थित होने का अनुभव

→ मेरे सामने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर में ब्रह्मा बाबा

→ उनकी भृकुटि में मेरे दिलाराम शिव बाबा चमक रहे हैं

→ अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप को धारण कर मैं बाबा के पास पहुंचती हूँ

■ बाबा मुझ बच्चे को अपने दिल रूपी तख्त पर बिठा रहे हैं

➳ _ ➳ परमात्म शक्तियों से बाबा भरपूर कर रहें है

■ बाबा का दिलतख्तनशीन बनने के लिए पुराने आसुरीय संस्कारों को छोडने का दृढप्रतिज्ञा कर रही हूँ

➳ _ ➳ परंधाम में स्थित रहने का अनुभव

→ निराकारी आत्मा बन रही हूँ

■ योग अग्नि में पुराने आसुरी स्वभाव संस्कारों को भस्म करने के लिए चल पड़ती हूँ परमधाम

■ आत्माओं की निराकारी दुनिया मे अब मैं आत्मा स्वयं को देख रही हूँ

→ मेरे सामने मेरे दिलाराम शिव बाबा विराजमान हैं

→ उनसे पवित्रता की शक्तिशाली किरणों आ रही है

→ योग अग्नि में मेरे पुराने आसुरी स्वभाव संस्कार जल कर भस्म हो रहें हैं

➳ _ ➳ यह मंगल मिलन मन को असीम सुख का अनुभव करवा रहा है

➳ _ ➳ सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों में मैं आत्मा सिमटती जा रही हूँ

■ अनादि संस्कारों से भरपूर होने का अनुभव करने के बाद मैं निराकारी दुनिया से वापिस साकारी दुनिया में लौट आती हूँ

➢➢ स्मृतिस्वरूप स्थिती में स्थित होने का अनुभव

➳ _ ➳ अब मैं अधीनता के सब संस्कारों को छोड़ती जा रही हूँ

ब्राह्मण तन में

■ अपने मन और बुद्धि को आदि-अनादि स्वरुप की स्मृति दिलाकर स्मृति स्वरूप बनती जा रही हूँ

■ मुझ आत्मा के मन-बुद्धि का भटकने का संस्कार खत्म होता जा रहा है

■ मन और बुद्धि को सदा सेवा में बिजी रखने वाली निर्विघ्न सेवाधारी स्थिति का अनुभव करती जा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं खुदाई खितमतकार हूँ

➳ _ ➳ मैं निमित्त हूँ

→ अल्पकाल के नाम मान शान के लिए कभी भी सेवा का वर्णन नहीं करती हूँ

→ निस्वार्थ भाव से अपने को निमित समझ सेवा कर रही हूँ

→ करावनहार करा रहा है मैं बस कर रही हूँ

→ अब मैं आत्मा अपना बुद्धि योग सिर्फ प्यारे बाबा से लगाती हूँ

→ किसी भी देहधारी से नहीं

→ मैं आत्मा विशेष शक्तियों का स्वयं में अनुभव कर रही हूँ

→ आने वाली आत्माओं को भी विशेष शक्ति का अनुभव करवा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा ईश्वरीय सेवाधारी हूँ

➳ _ ➳ सदा इसी स्मृति में रहकर सेवा करती हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप समान बनकर औरों को आप समान बना रही हूँ

■ मैं आत्मा ब्रह्मा बाप सामान सर्व के कल्याण की भावना से सर्व को आगे बढ़ा रही हूँ और स्वतः आगे बढ़ती जा रही हूँ और सफलतामूर्त बन रही हूँ